"महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षा व्यवस्था सम्बन्धी विचारः सत्यार्थ प्रकाश के विशेष संदर्भ में"

लघु शोध

मास्टर ऑफ एजुकेशन (एम0एड0) उपाधि की प्राप्ति के लिए आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत

पर्यवेक्षक

डॉ0 स्मिता श्रीवास्तव

(सहायक प्रोफेसर)

शिक्षा संकाय

शोधकर्ता

शोभित कुमार शुक्ला

Enrolment No. 1800103025

(एम0एड0)

इण्टीग्रल विश्वविद्यालय, लखनऊ

सत्र – 2019–20

घोषणा–पत्र

मैं शोभित कुमार शुक्ला एम0एड0 छात्र इन्टीग्रल विश्वविद्यालय लखनऊ घोषणा करता हूँ कि प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध **''महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षा व्यवस्था सम्बन्धी विचारः सत्यार्थ प्रकाश के विशेष संदर्भ में''** मेरा स्वयं का मौलिक प्रयास है मैने यह लघु शोध प्रबन्ध निर्देशिका डा0 स्मिता श्रीवास्तव (एसोसिएट प्रोफेसर शिक्षा संकाय) के निर्देशन में सत्र 2019–20 के दौरान एम0एड0 उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु सम्पन्न किया है।

यह लघु शोध प्रबन्ध पूर्णतया मौलिक है और इससे पहले अन्यत्र कहीं भी प्रस्तुत नहीं किया गया है।

दिनांकः 29.07.2020

स्थान : लखनऊ

शोधार्थी

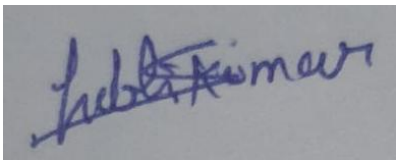

शोभित कुमार शुक्ला

(एम0एड0)

षिक्षा संकाय

इण्टीग्रल विष्वविद्यालय, लखनऊ।

2019–20

<u>प्रमाण – पत्र</u>

प्रमाणित किया जाता है कि प्रस्तुत अध्ययन जिसका शीषर्क **''महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षा व्यवस्था सम्बन्धी विचारः सत्यार्थ प्रकाश के विशेष संदर्भ में''** शोधकर्ता शोभित कुमार शुक्ल (नामांकन संख्या – 1800103025) द्वारा सत्र 2019–20 में मास्टर आफॅ एजुकेशन (एम0एड0) की उपाधि के लिए आंशिक पूर्ति हेतु मेरे निर्देशन में पूर्ण किया गया है।

स्थान– लखनऊ

दिनांकः 29.07.2020

शोध पर्यवेक्षिका

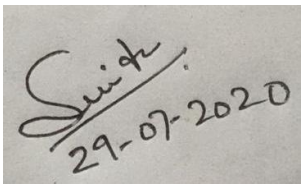

डॉ0 स्मिता श्रीवास्तव

(सहायक प्रोफेसर)

शिक्षा संकाय

इण्टीग्रल विष्व विद्यालय

लखनऊ।

आभार

लघु शोध ''महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षा व्यवस्था सम्बन्धी विचारः सत्यार्थ प्रकाश के विशेष संदर्भ में'' को पूरा करने के लिए मुझे शक्ति एवं बुद्धि प्रदान करने में उस सर्व शक्ति मान ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ।

प्रस्तुत शोध में अनेक श्रद्धेय विद्वानजनों ने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में योगदान दिया है। उन सभी के सहयोग प्रेरणा व विचारों के बिना मैं इस रचनात्मक कार्य को पूरा करने में अक्षय रहती अतः उन सभी के प्रति ह्यदयगत सम्पूर्ण श्रृद्धा सहित आभार निवेदन करता हूँ।

प्रस्तुत शोध के अपने पर्यवेक्षक मानवीय डॉ0 स्मिता श्रीवास्तव सहायक प्रोफेसर शिक्षा संकाय के प्रति सह्रदय कृतज्ञ हूँ प्रस्तुत लघु शोध का प्रस्तुतीकरण का श्रेय यथा रूप उन्हीं को जाता है।

मै माननीय डॉ0 उस्मानी डीन महोदय और एच0ओ0डी डॉ अदनान खान लोधी के प्रति अत्यंत अभारी हूँ जिन्होने मुझे प्रस्तुत शोध कार्य करने की अनुमति प्रदान के साथ ही सभी आवश्यक सहायता एवं सुविधा उपलब्ध करायी और समय –समय पर बहुमूल्य सुझाव एवं मार्ग दर्शन दिया।

हमारे शिक्षा संकाय इण्टीग्रल विश्वविद्यालय के अन्य सभी प्रोफेसर का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने बीच–बीच मेरा उत्साह वर्धन एवं मार्ग दर्शन दिया।

मैं सभी एम0एड0 सहपाठियों की उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ जिन्होंने निरन्तर अनुकूल वातावरण पारम्परिक की भावना एवं शोध कार्य में गत्यात्मकता बनाकर विकालोन्नमुख होने की प्रेरणा करते रहे ।

मैं अपने माता–पिता के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द कम पड़ जाते है जिन्होंने अपना पूर्ण सहयोग एवं समर्थन मुझे प्रदान किया तथा सभी प्रकार के उत्तरदायित्वों का निर्वाह किया जिनके पूर्ण सहयोग लें प्रस्तुत शोध कार्य सम्पूर्ण कर पाया मैं उनका धन्यवाद करता हूँ जिनका आर्शीवाद सदैव मेरे साथ रहा ।

दिनांक 29.07.2020

स्थान – लखनऊ

शोधकर्ता

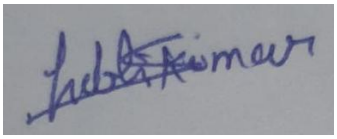

शोभित कुमार शुक्ला

(एम0एड0)

षिक्षा संकाय

इण्टीग्रल विष्वविद्यालय, लखनऊ।

2019–20

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय प्रस्तावना 1—13

1.1 प्रस्तावना

1.2 अध्ययन की आवश्यकता

1.3 अध्ययन की न्यायोचितता

1.4 समस्या कथन

1.5 समस्या की व्याख्या

1.6 समस्या का उद्देश्य

1.7 समस्या का सीमांकन

द्वितीय अध्याय 14—19

2.1 सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.2 सम्बन्धित साहित्य का महत्व

2.3 सम्बन्धित साहित्य पर किये गये पुराने कार्य

तृतीय अध्याय 20—26

3.1 अध्ययन की प्रविधि

3.2 सत्यार्थ प्रकाश के महत्वपूर्ण बिन्दु

3.3 छात्रों में पठन—पाठन व्यवस्था

3.4 सत्या सत्य ग्रन्थों के नाम

3.5 पठन—पाठन विधि

3.6 सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार विद्या व अविद्या

3.7 सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार भक्ष्याभक्ष्य की व्याख्या।

चतुर्थ अध्याय **27—34**

4.1 महर्षि दयानन्द जी का जीवन परिचय

4.2 महर्षि दयानन्द जी के द्वारा रचित ग्रन्थ

4.3 स्वामी दयानन्द के अनुसार राजधर्म

4.4 राज गुण

4.5 राजा पुरूष और शास्त्र व्यवहार हेतु विवादास्पद मार्ग

4.6 राज दिनचर्या

पंचम अध्याय **35—48**

महर्षि दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचारों की समीक्षा, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 शैक्षिक चिन्तन

5.2 सैद्धान्तिक स्तर पर

5.3 पद्धति स्तर पर

5.4 भारतीय शिक्षा में महर्षि दयानन्द सरस्वती के चिन्तन की प्रासंगिकता

5.5 निष्कर्ष

5.6 भावी अध्ययन हेतु सुझाव

1. शिक्षा के उद्देश्य सम्बन्धी सुझाव
2. पाठ्यक्रम सम्बन्धी सुझाव
3. शिक्षक विधियों से सम्बन्धित सुझाव
4. गुरू शिष्य सम्बन्ध के संदर्भ में सुझाव
5. महिला शिक्षा सम्बन्धी सुझाव
6. प्रौढ़ शिक्षा सम्बन्धी सुझाव
7. व्यवसायिक शिक्षा सम्बन्धी सुझाव

8. मूल्यों पर आधारित शिक्षा सम्बन्धी सुझाव

9. अनिवार्य , निशुल्क व सार्वभौमिक शिक्षा सम्बन्धी सुझाव

10.अनुशासन से सम्बन्धित सुझाव

5.7 अन्य सुझाव

5.8 भावी शोधकर्ताओं के लिए सुझाव

संदर्भ ग्रन्थ सूची **49—51**

प्रथम अध्याय

1.1 प्रस्तावना

1.2 अध्ययन की आवश्यकता

1.3 अध्ययन की न्यायोचितता

1.4 समस्या कथन

1.5 समस्या की व्याख्या

1.6 समस्या का उद्देश्य

1.7 समस्या का सीमांकन

महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षा व्यवस्था सम्बन्धी विचारः सत्यार्थ प्रकाश के विशेष सन्दर्भ में

1.1 प्रस्तावनाः

आदि काल से भारतीय संस्कृति का बोलबाला रहा है लेकिन उन्नीसवीं शताब्दी एक ऐसे काल के रूप में भारतीय संस्कृति के लिए आयी, जिसमें भारतीय संस्कृति के पतन की ओर अग्रसर कर दिया। इस भारतीय संस्कृति के पतन का कारण मूल रूप से तत्कालीन अंग्रेजी शासक थे, जिन्होंने भारतीय चेतन को पूर्ण रूप से सुशुप्त बनाये रखने का अपना पूर्ण प्रयास किया।

इसी समय अपनी प्रचण्ड विध्ता, अध्ययन स्वाध्याय एवं एक पर्यायवादी विचारधारा से एक पाश्चात्य सभ्यता की तरफ बढ़ रही भारतीय आत्मा को पुरातन भारतीय संस्कृति को स्थान देने तथा अपनी खो चुकी भारतीय संस्कृति के प्रति भक्ति को पुनः जीर्णोधार के लिये भारतीयों का आहवान किया। शिक्षा व्यक्ति को ही नही शिक्षित करती है, यह एक समाज और समाज से राष्ट्र से विश्व को उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है।

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को सर्वांगीण विकास करने से है अर्थात शारीरिक, मानसिक, बौधिक, संज्ञानात्मक विकास शिक्षा से ही होता है।

शिक्षा व्यवस्था समय–समय पर अपना स्वरूप बदलती रही है जैसे आदिकाल में आश्रम में गुरूकुल में आज विश्वविद्यालयों में स्कूलों में शिक्षा–दीक्षा कार्य सम्पन्न होता है, लेकिन शिक्षा का स्वरूप तो बदला परन्तु उद्देश्य आज भी सर्वांगीण विकास ही है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने इसी शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने का कार्य अपने ग्रन्थों, किताबों, भाषणों जैसे सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रन्थ के माध्यम से किया है।

वर्तमान समय में भारतीय संस्कृति अपने मूल को भूलती जा रही है तथा पाश्चात्य सभ्यता की ओर अग्रसर है। अपने मूल को खोना ही विनाश का एक प्रमुख कारण होता है।

भारतीय दर्शन में आध्यात्म का ज्ञान पढ़कर तथा कुछ शताब्दियों पहले हासिल की गयी उपलब्धियॉ तथा उन उपलब्धियों का मूल्य जानकर पाश्चात्य जगत के जानकार, मनीशी तो भारतीय संस्कृति की तरफ भाग रहे है, किन्तु भौतिक चकाचौंध ने भारतीय संस्कृति को पश्चिमी सभ्यता की तरफ ले जा रहा है।

शिक्षा केवल औपचारिक ही नही बल्कि बालक के ऊपर पड़ने वाले सभी प्रभावो में शिक्षा का उत्तरदायित्व प्रथम स्थान पर होता है।

यह देश धर्म प्रधान रहा है। लेकिन समय–समय पर राजनैतिक कारणों ने धर्म के मूल को बदलने का भी प्रयास किया है, भाषा में तो बदलाव सम्भव किया लेकिन धर्म के मूल में बदलाव के दुष्परिणामों की व्याख्या महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने ज्ञान, विवेक और यथार्थवादी विचारधारा के माध्यम से बखूबी किया है।

हमारे जीवन को उन्नति के मार्ग पर एक शिक्षक ही ले जा सकता है और यदि वह शिक्षक हमारे वैदिक धर्म की शिक्षा दे तथा वैदिक संस्कृति की कुंजी प्रदान करें वह केवल हम पर उपकार ही नही करता बल्कि वह समस्त विश्व का

उपकारी होता है महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने यह उपकार समस्त विश्व पर किया है।

'सत्यार्थ प्रकाश' को कर्ता के तात्पर्य विरूद्ध मंशा से देखेगा उसको कुछ भी अभिप्राय विदित न होगा क्योंकि वाक्यार्थ बोध में चार कारण होते है–

आकांक्षा, योग्यता, आसलि और तात्पर्य जब इन चारों बातों को ध्यान देकर जो व्यक्ति 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रन्थ को देखता है, उसको ग्रन्थ का अभिप्राय यथायोग्य विदित होता है।

'आकांक्षा' किसी विषय पर वक्ता की और वाक्यस्थ पदों की आकांक्षा परस्पर होती है।

'योग्यता' वह कहाती है कि जिससे जो हो सके।

'आसत्ति' जिस पद के साथ जिसका सम्बन्ध हो उसी के समीप पद का बोलना व लिखना।

'तात्पर्य' जिसके लिए वक्ता ने शब्दोच्चारण व लेख किया हो।

यह सर्वविदित है कि भारतीय इतिहास में धार्मिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से 19वीं शताब्दी में अपना एक विशेष महत्वपूर्ण स्थान रखा है। इसी दौरान अनेक महापुरूषों ने, दार्शनिकों ने जन्म लेकर अपने ज्ञान, योग्यता, विवेक, दर्शन, शिक्षा आदि के माध्यम से सार्वभौमिक सुख के लिए शैक्षिक एवं धार्मिक प्रामाणिक आधार भी प्रदान किए । उन महापुरूषों में **महर्षि दयानन्द सरस्वती** जी का नाम यथोचित व सर्वोपरि है।

भारतीय समाज की तात्कालिक परिस्थितियॉ, भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं पुनर्जागरण पर विशेष तौर पर ध्यान दे रही है। वर्तमान समय में शारीरिक, सामाजिक, मानसिक, संज्ञानात्मक ज्ञान तथा विकास के साथ–साथ एक ऐसी

शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है जो व्यक्ति के चरित्र निर्माण में सक्षम हो। ऐसी शिक्षा व्यवस्था की पुनर्रचना में **दयानन्द जी** के दार्शनिक चिन्तन का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। तात्कालिक शिक्षा सूत्रों के अतिरिक्त अनेक ऐसे पाश्चात्य शिक्षा सूत्र भी उपलब्ध हैं जो व्यक्ति के चारित्रिक विकास के साथ–साथ ज्ञान की तरफ भी ले जाते हैं।

इस विकास की प्रणाली में 'महर्षि दयानन्द' के चिंतन का विश्लेषण यथार्थवादी सोच, आदर्श भौतिक संरचना की दृष्टि से उपयोगी होगाा।

इस दृष्टि से यह शोध हेतु प्रस्तुत विषय का चयन किया गया है।

1.2 अध्ययन की आवश्यकता

इतिहास साक्षी है कि सम्पूर्ण विश्व ने शिक्षा को ज्ञान के साथ–2 व्यवसाय भी माना है। **सुकरात, कन्फ्यूशियस, विवेकानन्द, गौतम बुद्ध, प्लेटो, रूसो, अरस्तू, दयानन्द सरस्वती** इने सभी ने वास्तविक रूप से मनुष्य को सद्मार्ग तथा चारित्रिक विकास के लिए प्रेरित किया। अतः हम यह कह सकते हैं, वास्तविक रूप से समाज को सुदृढ़ बनाने का कार्य किया।

अतः यदि बात वास्तविक शिक्षक की की जाये तो इनका स्थान सर्वोपरि है।

जैसा कि सर्वविदित है कि प्राचीन काल में हमारे देश के शिक्षकों ने एक ऐसी सुदृढ़ शिक्षा प्रणाली प्रचलित की थी जिसके कारण भारत को विश्व गुरू कहा गया। वर्तमान समय में शिक्षा व्यवस्था के बदलाव के परिणामस्वरूप मानव को यन्त्रीकरण और भौतिकवाद के उत्कर्ष की तो प्राप्ति हुई लेकिन इसके साथ–साथ विशेष समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, जैसे– असंतोष, अव्यवस्था, अलगाववाद, प्रदर्शन आदि में उलझा हुआ मानव एक ऐसे दर्शन की प्रतीक्षा कर रहा है जो इन समस्याओं को दूर कर सके। ऐसी शिक्षा व्यवस्था की प्रतीक्षा कर रहा है जो व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, गत्यात्मक, भावात्मक, संवेगात्मक, ज्ञानात्मक, चारित्रिक, सामाजिक, व्यावहारिक विकास को एक पोषित समाज में घोल सके।

हमारे महान् दार्शनिकों का कहना है समाज या व्यक्ति में बदलाव या पुनर्जागरण शिक्षा के माध्यम से ही हो सकता है।

जॉन डी.वी. के अनुसार– " शिक्षा दर्शन एक प्रयोगशाला है'' **व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक वाटसन के अनुसार–**''आप मुझे बालक दीजिए, मैं उसे डॉक्टर, वकील या जो कहोगे, बना दूँगा।''

अतः उपरोक्त ज्ञानियों ने हमें यह बताया कि शिक्षा रूपी प्रयोगशाला हम मनचाहे समाज का निर्माण कर सकते है।

शिक्षा–शिक्षार्थी सम्बंधों का जो स्वरूप 'वेदान्त शिक्षा दर्शन' प्रस्तुत करता है वह किसी भी समाज व किसी भी युग के लिए आदर्शन सम्बन्धों की परिकल्पना है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कुप्रथाओं को दूर करने का प्रयास शिक्षा के माध्यम से किया है शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बंधों का जो स्वरूप वेदांत शिक्षा दर्शन प्रस्तुत करता है वह किसी भी समाज व किसी भी युग के लिए आदर्श सम्बंधों की परिकल्पना है।

आज तक हम भारतीय अपने मूल को छोड़कर पाश्चात्य चिंतन को भी अपना नहीं सके और न तो अपने प्राचीन आदर्शो पर शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ कर सके। भारतीय समाज के लिए यह अति आवश्यक है कि शिक्षा का ऐसा स्वरूप हो जिसके आधार पर भौतिक वातावरण में रहकर ही व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास हो सके।

डॉ0 कीर्ति देवी का मानना है कि भारत में ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिसमें राष्ट्रीय तत्व आवश्यक हो ताकि भारत के प्राचीन गॉव को पुनः प्रतिष्ठित किया जा सके। इतना ही नहीं वर्तमान शिक्षा की नींव एक ठोस जीवन दर्शन भारत की आध्यात्मिक दर्शन के आधार पर खड़ी हो जिससे भारतीय जाति में आत्म विश्वास व सुदृढ़ता आ सके।

योगी जी अरविन्द घोष के अनुसार '' वास्तविक शिक्षा का उद्देश्य चेतन का विकास उनका विश्वास है मानव से ही अति मानव का विकास होता है अतः उनके अनुसार वास्तविक शिक्षा का प्रयोजन है दिव्य मानव का विकास, उसका संस्कार और रूपान्तरण।

सम्पूर्ण विश्व का दुर्भाग्य है कि अभी तक ऐसी शिक्षा व्यवस्था नही तैयार कर पाये जिसका अनुसरण कर सभी लोग सुदृढ़ समाज को तैयार कर सके तथा अग्रिम पीढ़ी का मानव अस्तित्व के भौतिक एवं आध्यात्मिक मांगों के प्रति पूर्ण न्याय कर सके। विश्व ने जागृति हेतु शिक्षा को व्यक्तिपूर्ण विकास का आधार नहीं बनाया। वास्तव में शिक्षा तो वह है, जो जीवन का निर्माण कर सके। ऐसी शिक्षा से क्या लाभ जो शिक्षा तो प्रदान करें किन्तु उत्तम व्यक्तित्व का निर्माण न कर सके तो वह शिक्षा व्यर्थ है।

व्यक्तित्व निर्माण का तात्पर्य व्यक्ति का सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण से है। व्यक्तित्व निर्माण को पोषित करने के प्रयास हर युग में होते रहे है उन प्रयासों को सफलता में बदलने का कार्य वर्तमान और भविष्य दोनों पीढ़ियों का है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने महान् योगी, ज्ञानवान, यथार्थवादी, विचारधारक, मनीषी, दयानन्द सरस्वती जी के चिंतन एवं सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रन्थ को चुना।

दयानन्द सरस्वती जी के शिक्षा सम्बंधी चिंतन का जो व्यावहारिक प्रयोग है वह कहाँ तक इस भौतिकवादी समाज में न्यायोचित है। व्यक्ति अपने आदर्शो और अपने व्यवहारों को किस प्रकार से समन्वित करता है यह दयानन्द जी की विचारधारा में झलकता है। शोधकर्ता के विचार से यह अध्ययन एक बड़े वैचारिक अभाव की पूर्ति करेगा।

अतः अनुसंधानकर्ता ने भारत में आर्यसमाज की स्थापना करने वाले वेदों के ज्ञानी, निराकार ब्रम्ह के उपासक, समाज–सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक चितन का अध्ययन सत्थार्थ प्रकाश के संदर्भ में शोधकार्य का विषय बनाया है।

कथन चयन–

शोधकर्ता ने महर्षि दयानन्द जी के द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रन्थ का अध्ययन किया तथा उनके चिन्तन और विचारों को चिन्हित किया।

1.3 अध्ययन की न्यायोचितता

तात्कालिक शिक्षा व्यवस्था जिस पतन की स्थिति पर पहुॅच रही है उसका विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है कि हम सत्य ज्ञान की तरफ अग्रसर नहीं है। अतः इस व्यवस्था का परिवर्तन देश के हित में परम आवश्यक है विभिन्न शिक्षा आयोगों के द्वारा केन्द्रीय और प्रान्तीय स्तर पर तैयार किया गया शिक्षा का प्रारूप भारत की शिक्षा व्यवस्था को बिगाड़ता जा रहा है। जैसा कि हम देख रहे है कि आज शिक्षा न व्यावहारिक दृष्टिकोण से जीवनपयोगी बन पायी है न ही वह नवयुवकों के चरित्र निर्माण में सहायक सिद्ध हो रही है। इस शोध में हमारा ध्येय **महर्षि दयानन्द जी के शिक्षण सम्बंधी चिंतन का सही व निष्पक्ष रूप से अध्ययन करना है। महर्षि दयानन्द** जी के विचार सार्वभौमिक रूप से शिक्षण कारी नीतियों में धनात्मक परिवर्तन लाने की भक्ति रखते हैं। शोधकर्ता ने महर्षि दयानन्द जी के विचारों का चिंतन व मनन करके एक नूतन शैक्षिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। जिससे कि इस समाज को पोषित रूप से और व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए महर्षि दयानन्द जी जैसे पुरूष उत्पन्न किए जा सके।

1.4 समस्या कथन –

''महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षा व्यवस्था सम्बन्धी विचार : सत्यार्थ प्रकाश के विशेष संदर्भ में –

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

1. महर्षि

1. सन्त 2. भगवान 3. सत्य 4. तपस 5. दर्शन करने वाला

6. विशिष्ट पुरूष 7. घर का प्रधान पुरूष

2. दयानन्द सरस्वती –

संज्ञा पुल्लिंग (संज्ञा दयानन्द सरस्वती) आर्य समाज के संस्थापक सन् 1824 से 1883 तक है।

3. शैक्षिक का कोशगत अर्थ –

शैक्षिक का तात्पर्य शिक्षा के अध्ययन से है। शैक्षिक शब्द शिक्षा से उत्पन्न है –

'' शिक्षा इत्यः ततश्टाम्।''

1. किसी विद्या को सीखने और सिखाने की क्रिया
2. छह वेदान्गों में से 'एक' जिसमें वेदों का वर्ण, स्वर, मात्रा आदि का निरूपण रहता है।
3. गुरू के निकट विद्या का अभ्यास
4. दक्षता
5. उद्देश्य मंत्र

व्यवस्था

1. उचित नियोजन
2. इंतजाम
3. प्रबंध
4. ढंग
5. तरीका
6. विधान
7. सुझाव

सम्बंधी

1. जुड़ा हुआ
2. सम्बंध रखने वाला

विचार

1. मानसिक तर्क– वितर्क
2. मानसिक सोचना– समझना
3. आगा पीछा निश्चित करना
4. विचारक
5. सम्मति

सत्यार्थ प्रकाश

1. महर्षि दयानन्द द्वारा रचित ग्रन्थ

विशेष–

1. असाधारण
2. असामान्य
3. विपुल
4. प्रचुर

संदर्भ

1. वर्णित प्रसंग
2. विवेचनात्मक ग्रन्थ
3. विवेच विषय का स्वरूप और परम्परा

1.6 समस्या का उद्देश्य–

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती का संक्षेप में जीवन परिचय एवं उनका साहित्य और कार्यो संक्षेप में जीवन परिचय एवं उनका साहित्य और कार्यो का अध्ययन एवं शैक्षिक परिवेश में उनके चिंतन को ज्ञात करना है जिन्हें निम्न रूप में प्रस्तुत कर सकते है –

1. महर्षि के दार्शनिक एवं शैक्षिक चिन्तन का चयन एवं विवेचना करना।
2. भारत की वर्तमान शैक्षिक आवश्यकताओं, आकाक्षाओं तथा आस्थाओं के अनुरूप शिक्षा दर्शन की रूपरेखा का निरूपण करना।
3. महर्षि के शैक्षिक चिन्तन के माध्यम से भावी शिक्षकों में एक सम्यक शैक्षिक दृष्टिकोण विकसित करना।
4. महर्षि द्वारा रचित 'सत्यार्थ प्रकाश' के महत्वपूर्ण बिन्दु पर चर्चा।
5. छात्रो में पठन– पाठन व्यवस्था पर चर्चा।
6. सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार, विद्या एवं अविद्या पर चर्चा।

1.7 समस्या का सीमांकन–

इस लधु शोध प्रबंध में शोधकर्ता महर्षि दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचारों का अध्ययन उन्होनें अपने स्वरचित ग्रन्थों में वर्णन किया है, उन विचारों का दिग्दर्शन कराने का प्रयत्न किया है। इस लघु शोध में शोधकर्ता ने छात्रों में पठन–पाठन की व्यवस्था, आचार–विचार, विद्या, अविद्या, मोक्ष, बंध, भक्ष्याभक्ष्य आदि विचारों को समझाने का प्रयास किया है। संक्षेप में शोधकर्ता ने केवल स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के शिक्षा दर्शन में समाहित शैक्षिक उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियॉ, परीक्षा पद्धति तथा शिक्षा से सम्बंधित अन्य समस्याओं का ही अध्ययन किया गया है।

द्वितीय अध्याय

2.1 सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.2 सम्बन्धित साहित्य का महत्व

2.3 सम्बन्धित साहित्य पर किये गये पुराने कार्य

द्वितीय अध्याय

2.1 सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

किसी अच्छे नियोजक अनुसंधान अध्ययन से पहले सम्बंधित साहित्य का सवैक्षण अति आवश्यक है। सर्वेक्षण शोधकर्ता को जिस क्षेत्र में वह अनुसंधान करने वाला है, उसमें वर्तमान ज्ञान के लिए मार्गदर्शन कराता है।

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र पत्रिकाओं, प्रकाशित शोध प्रबंधो एवं अभिलेखों आदि से है। जिसके अध्ययन से अनुसांधन कर्ता को अपनी समस्या के चयन अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे अढ़ाने में सहायता मिलती है।

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन कार्य :–

सम्बन्धित साहित्य के प्रमुख पांच कार्य

1. यह अनुसंधान कार्य के लिये आवश्यक सैद्धान्तिक पृष्ठ भूमि प्रदान करता है। प्रत्येक प्रत्यय और धारणा को स्पष्ट करता हैं
2. इसके द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि समस्या क्षेत्र में अनुशंधान की स्थिति क्या है। क्या कब कहाँ किससे और कैसे अनुसंधान कार्य किया है। इसके ज्ञान द्वारा अपने अध्ययन की योजना बनाना सुविधाजनक हो जाता है।
3. सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण, अनुसंधान के लिये अपनी जाने वाली विधि प्रयोग में लाये जाने योग्य उपकरण तथा आंकडों के विश्लेषण के लिये प्रयोग में आने वाली उपवयुक्त विधियों को स्पष्ट करता है।
4. यह इस तथ्य का भी आभास देता है कि लिया गया अनुसंधान कार्य किस सीमा तक सफल हो जायेगा और प्राप्त निष्कर्षो को उपयोगिता क्या होगी?
5. इसका यह महत्वपूर्ण कार्य समस्या के परिभाषीकरण अवधारणा बनाने, समस्या के सीमाकन और परिकल्पना के निर्माण में सहायता करना है।

2.2 सम्बधित साहित्य के अध्ययन का महत्व :–

पूर्व में हुये शोधों के अध्ययन के फलस्वरूप शोधकर्ता को यह ज्ञात हो जाता है कि क्या ज्ञान प्राप्त किया जा चुका है तथा क्या ज्ञान अभी प्राप्त किया जा सकता है। वस्तुतः सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधाकर्ता का कार्य करने अन्धे के तीर के समान होगा। इसके अभाव में उचित दिशा में एक पग भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता है। इसके महत्व को स्पष्ट करते हुए गुड़ वार तथा स्केट्स कहते है कि–

'' एक कुशल चिकित्सक के लिए आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में ही रही औषधी सम्बंधी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिये भी उस क्षेत्र से संम्बधित सूचनाओं एवं खोजो ं से परिचित होना आवश्यक है।''

इससे शोधकर्ता पहले से ही सिद्ध कार्यों को अनजाने में दोहराने से बच सकता तथा वह ऐसा क्षेत्र चुन सकता है जिसमें लाभदायक खोज हो सकेगी तथा उसके प्रयासों से ज्ञान में सार्थक वृद्धि होगी। इससे शोधकर्ता को अनुसंधान की पृष्ट भूमि ज्ञान हो समती है और अध्ययन की वर्तमान स्थिति सेवह परिचित हो जाता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन करने से शोधकर्ता की समस्या की व्यवस्था करने, समस्या का महत्व समझने, सहायक व उपयुक्त उपकरण चुनने, उपयुक्त शोध विधि तथा प्रदत्तों की प्राप्ति में बहुमूल्य सहायता मिलती है।

सम्बनधित साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात ही अनुसंधानकर्ता अपने तथ्यों के लिए मार्ग ढूढ़ने में सफल हो सकता है अतः अनुसंधान कार्य के लिए समबनधित साहित्य का सर्वेक्षण नितान्त आवश्यक है।

गुड, बार एवं स्केट्स के अनुसार– एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे। उसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।

ज्ञान राशि के संचित कोष का नाम साहित्य है यह ज्ञान, अनुभव, तर्क, खोज, विचार आदि को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में ले जाने का कार्य करता है।

शोधकर्ता को अर्थपूर्ण समस्या का चयन करने तथा उद्देश्यों के निर्धारण में सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से ही दिशा प्राप्त होती है।

सम्बन्धित साहित्य का तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रबंधों अभिलेखों से है जिसके अध्ययन से अनुसंधनकर्ता को अपने अध्ययन की दिशा तय करने में मदद मिलती है। ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में अनुसंधानकर्ता के लिए पुस्तकालय तथा उसके अनेक साधनों से परिचित होना आवश्यक है। उसके बाद ही विशिष्ट ज्ञान का प्रभावपूर्ण अध्ययन सम्भव हो सकता है।

उपर्युक्त सभी महत्वपूर्ण पक्षों को ध्यान में रखकर ही शोधार्थी ने सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन किया जिससे अनुसंधानकर्ता अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर हो सके।

महर्षि दयानन्द के चिंतन को समझने का प्रयत्न पिछले वर्षो में पर्याप्त रूप से हुआ है विषय चयन के उपरान्त शोधार्थी ने भी विषय की जानकारी हेतु महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन परिचय उनके दार्शनिक चिंतन तथा उनके शैक्षिक सिद्धान्तों के सम्बंध में विभिन्न पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन कियां इस

सम्बंध में भारत और विदेशो में जो कार्य हुआ है, इस सम्बंध में शोधार्थी जिन अन्य संदर्भो का सहारा लिया है उसकी सूची अंत में दे दी गयी है।

2.3 सम्बन्धित साहित्य पर किये गये पुराने कार्य –

1. **मंजू कुमार (2003)[1] ''यूथ एण्ड धर्म''** डिपार्टमेण्ट ऑफ हिस्ट्री इन देहली पब्लिक स्कूल, न्यू देहली ने अपने शोध अध्ययन में धर्म के विषय में महषि दयानन्द के चिन्तन का वर्णन किया है।
2. **यादव, के0सी0 (2003)[2] ''आटो बायोग्राफी ऑफ दयानन्द सरस्वती''** प्रकाशक होप इण्डिया ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला है।
3. **शर्मा, एस0आर0, (2004)[3] ''लाइफ एण्ड वर्क ऑफ स्वामी दयाननद सरस्वती''** प्रकाशक बुक इन्क्लेव ने अपनी पुस्तक में महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्यो का वर्णन किया है।
4. **भारतीय कला प्रकाशन (2005)[4] ''द फिलोसफी ऑफ रिलीजन इन इण्डिया''** भारती कला प्रकाशन न्यू देहली ने भारत में धार्मिक दर्शन की व्याख्या की है।
5. **भटनागर, एस0सी0 (2005)[5] ''इन्टलेक्चुअल ट्रेडिशन इन आर्य समाज''** यूनिवर्सिटी ऑफ निवेदा, लॉस वेगास ने अपने शोध अध्ययन में आर्य समाज द्वारा दो विदेश में स्थापित किये गये कालेजों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है।

6. **सांवत, बी0सी0 (2007)[6] ''इंडिपेन्डेंस इंडिपेन्डेंस''** नोयडा ने अपने प्रकाशित किताब में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्वतन्त्र भारत के लिए जो कार्य कये गये उनका वर्णन किया गया है।
7. **कुमार, वी0पी0, (2007)[7] ''मेजर हिस्टोरिकल पीरिएड्स एण्ड ट्रेन्ड्स इन द डेवलपमेण्ट ऑफ हिन्दूज फ्राम वैदिक टू वैदान्तिक पीरियड्स''** ने अपने शोध अध्ययन में वेदों और वेदों के समय हिन्दुस्तान में होने वाले ऐतिहासिक विकास और दिशा का वर्णन किया है।
8. **दुर्रानी, एफ0 के0 खान (2008)[8] स्वामी दयानन्द सरस्वती–ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ हिज लाइफ एण्ड टीचिंग''** ने शोध अध्ययन में महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन और शैक्षिक उद्देश्यों, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों का वर्णन किया है।
9. **कामत, ज्योत्सना, (2008)[9] ''द पाइनियरः सेज ऑफ दयानन्द सरस्वती''** ने अपने अध्यन में महर्षि दयानन्द सरस्वती से जुड़े प्रत्येक पहलू की खोज कर विस्तारपूर्वक वर्णन किया है।

सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना के पश्चात ही यह विचारधारा आरम्भ हो गयी थी कि वेदों का प्रचार विदेशों में भी किया जाए। सन् 1978 में थियोसोफिकल सोसायटी न्यूयार्क और महर्षि दयानन्द जी के बीच पत्र व्यवहार मूलता इसी आशय को लेकर किया गया था कि वैदिक धर्म को दूसरे देशों में फैलाया जाय वेद मानव मात्र के लिये है इसीलिये विश्व के सभी लोगों को आर्य बनाना महर्षि दयानन्द सरस्वती का लक्ष्य था।

महर्षि के मृत्यु के पश्चात बहुत से आर्य उपदेशक विभिन्न देशों में और उन्होंने वहॉ आर्य समाज की स्थापना और वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार किया। जैसे–जेसे आर्य समाज का प्रचार बढ़ता गया विदेशों में भी स्कूल कालेजों और पाठ्शालायें खुलनी आरम्भ हो गई और पुस्तकें व पत्रिकायें भी प्रकाशित होने लगी जिनमें वहॉ की धार्मिक और शैक्षिक गतिविधियों का उल्लेख होता था।

संसार के अनेक देशों में जैसे दक्षिण अफ्रीका, मारेशस, सूरीनाम, वर्मा, थाईलैण्ड, ग्याना, अमरीका, यूरोप, इंग्लैण्ड आदि में आर्य समाज स्थापित हो चुके है, उनके सम्बन्ध में कुछ साहित्य का सृजन भी हुआ है।

तृतीय अध्याय

3.1 अध्ययन प्रविधि

3.2 सत्यार्थ प्रकाश के महत्वपूर्ण बिन्दु

3.3 छात्रों में पठन–पाठन व्यवस्था

3.4 सत्या सत्य ग्रन्थों के नाम

3.5 पठन–पाठन विधि

3.6 सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार विद्या व अविद्या

3.7 सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार भक्ष्याभक्ष्य की व्याख्या।

तृतीय अध्याय

3.1 अध्ययन प्रविधि

जे0 डब्ल्यू0 बेस्ट ने शोध की विधियों को तीन भागो में वर्गीकृत किया है –

1. ऐतिहासिक विधि
2. वर्णनात्मक विधि
3. प्रयोगात्मक विधि

बेस्ट महोदय के उपर्युक्त वर्गीकरण के आधार पर अध्ययन के लिए गई विधि–'' ऐतिहासिक विधि'' है जो विवेचनात्मक अध्ययन विधि है क्योंकि प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ''अतीतकाल'' के तत्यों का विश्लेषण एवं विवेचन करना।

अतः अध्ययन की शोध प्रक्रिया के प्रमुख बिंदु निम्न है–

1. कथन चयन
2. वर्गीकरण
3. विवेचन

3.2 महर्षि द्वारा रचित 'सत्यार्थ प्रकाश' के महत्वपूर्ण बिन्दु –

'सत्यार्थ प्रकाश' एक ग्रन्थ है। यह 14 भागों में रचित है इसमें प्रथम 10 भाग पूर्वार्द्ध अन्तिम 4 भाग उत्तरार्द्ध में बने हैं–

1. प्रथम भाग में ईश्वर के ओंकार आदि नामों की व्याख्या।
2. द्वितीय भाग में सन्तानों की शिक्षा

3. तृतीय भाग में ब्रम्हचर्य पठन–पाठन व्यवस्था

सत्यासत्य ग्रन्थों के नाम और पढ़ने–पढ़ाने की रीति।

4. चतुर्थ भाग में विवाह और गृहाश्रम का व्यवहार।
5. पंचम भाग में वानप्रस्थ और सनयाश्रम की विधि।
6. राजधर्म, छठे भाग में उल्लेखित है।
7. सप्तम भाग में वेदेश्वर विषय
8. अष्टम भाग में जगत की स्थिति और प्रलय
9. विद्या, अविद्या बंध और मोक्ष की व्याख्या।
10. आचार, अनाचार, भक्ष्याभक्ष्य विषय
11. इस भाग में आर्यावर्तीय मत–मतान्तर का खण्डन–मण्डन विषय
12. इस भाग में 4 वाक् बौद्ध और जैन मत का विषय
13. प्रयोदश भाग में ईसाई मत का विषय
14. चौदहवे भाग में मुसलमानों के मत का विषय

इस ग्रन्थ में सत्य अर्थ का प्रकाश करना अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादित करना उल्लेखित है।

इस ग्रंथ में ब्रम्हा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त ऋषि मुनियों के वेद प्रतिपादित सार्वभूत चिंतन का संग्रह है।

इसमें आर्य समाज और मत –मतान्तरों के अंतर को अनेक स्थानों पर विशेष रूप से समझाया गया है।

3.3 छात्रों में पठन–पाठन व्यवस्था

विद्या विलास मनसो धृतशीलशिक्षाः,

सत्यवृता रहितमान मलापहाराः।

संसार दुःख दलनेन सुभूषिता थे,

धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

महर्षि दयानन्द के अनुसार संतानों को उत्तम विद्या शिक्षा गुण, कर्म और स्वाभाव रूप आभूषणों का धारण करना माता–पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है।

उपरोक्त श्लोकानुसार जिन पुरूषों का मन विद्या के विलास में तत्पर रहता सुन्दरशील स्वाभावयुक्त, सत्य भाषण, नियम पालन युक्त और जो अपमान अपवित्रता से रहित अन्य की मलीनता के नाशक, सत्योपदेश विद्यादान से संसारी जनों के दुःखों के दूर करने से सुभूषित वेद विहित कर्मो से पराए उपकार करने में रहते है। वे नर और नारी धन्य है बिना इसके किसी को शोभा प्राप्त नहीं होती।

आठ वर्ष की आयु में ही लड़कों एवं लड़कियों को अपनी–अपनी शाला में भेज देना चाहिए। जो अध्यापक दुष्टाचारी हो उनसे शिक्षा न दिलावें। द्विज अपने घर में लड़कों का यज्ञोपवीत और कन्याओं का भी यथायोग्य संस्कार करके अपनी–2 पाठशाला में भेज दें।

- पाठशाला एकान्त में होनी चाहिए।
- लड़के एवं लड़कियों की पाठशाला 2 कोश की दूरी पर होना चाहिये।

- कन्याओं की पाठशाला में एक नौकर एवं अध्यापक सहकर्मी स्त्री एवं पुरूष की पाठशाला में पुरूष होने चाहिए।
- स्त्रियों की पाठशाला में 5 वर्ष का लड़का एवं पुरूषों की पाठशाला में 5 वर्ष की लड़की भी न जा पावें।

अर्थातः जब तक वे ब्रम्हचारी व ब्रम्हचारिणी रहें तब तक स्त्री व पुरूष का दर्शन स्पर्शन, एकान्तसेवन, भाषण, विषय कथा, परस्पर क्रीडऋा विषय का ज्ञान और संघ इन 8 प्रकार के मैथुओं से अलग रहें।

- सबकों तुल्यवस्त्र, खानपान, आसन दिये जाये।
- सबको तपस्वी होना चाहिये।
- उनके माता पिता अपने सन्तानों से व सन्तान अपने माता –पिताओं से न मिल सके और न किसी प्रकार पत्र व्यवहार एक दूसरे से कर सकें। जिससे संसारी चिन्ता से रहित होकर केवल विद्या बढ़ाने की चिंता रखें जब भ्रमण करने जाये तब उनके साथ अध्यापक रखें जिससे किसी प्रकार की कुचेष्ठा न कर सके।

कन्यानां सम्प्रदानं च कुमाराणां च रक्षणम्।।

यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका अभिप्राय यह है कि इसमें राज नियम और जाति नियम होना चाहिये कि पांचवे अथवा आठवें वर्ष के आगे अपने लड़के–लड़कियों को घर में न रखकर पाठशाला में अवश्य भेज दें। प्रथम–यज्ञोपवीत बालकों का घर में हो और दूसरा–पाठशाला में।

3.4 सत्यासत्य ग्रन्थों के नाम और पढ़ने –पढ़ाने की विधि–

तत्रा हिंसा सत्यास्तेय ब्रम्हचर्यापरिग्रहाः यमाः।।

यह योगदर्शन का वचन है अर्थात् (अहिंसा) वैरत्याग, (सत्य) सत्य ही मानना, सत्य ही बोलना और सत्य ही करना (अस्तेत) अर्थात्मन, वचन, कर्म से चोरी त्याग (ब्रम्हचर्य) अर्थात् इन्द्रियों का संयम अत्यन्त लोलुपता अभिमान रहित इन पॉच यमों का पालन सदा करें। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद इन ग्रन्थों को सत्य ग्रन्थ दयानन्द जी ने बताया और कहा जो परित्याग के योग्य ग्रन्थ हैं उनका परिगणन संक्षेप से किया जाता है। सत्य ही मूल है असत्य से युक्त ग्रन्थस्थ सत्य को भी वैसे ही छोड़ देना चाहिये जैसे विषयुक्त अन्न को।

3.5 पठन–पाठन विधि –

यथा याग्य सब अक्षरों का उच्चारण माता–पिता व अध्यापक सिखलावें तदान्तर व्याकरण अर्थात् प्रथम अष्टाध्यायी के सूत्रों का पाठ सिखाएं।

- छह वर्षो के भीतर चारों ब्राम्हण अर्थात् ऐतरेय, सतपथ, साम और गोपथ, ब्राम्हणों के सहित चारों वेदों का स्वर, शब्द, अर्थ, सम्बन्ध तथा क्रिया सहित पढ़ना योग्य है।
- जो कुछ पढ़ना व पढ़ाना हो वह अर्थ ज्ञान सहित हो।
- सब वेदों को पढ़कर आयुर्वेद इसका अर्थ क्रिया, अस्त्र छेदन–वेदन, लेख, चिकित्सा, निदान, औसत, पथ्य, शारीर देश, काल और वस्तु के गुण ज्ञान पूर्वक 4 वर्ष के भीतर पढ़े– पढ़ावें।
- राजविद्या, धनुर्वेद, शस्त्रवेद, जीवरचना यथावत 2 वर्ष में सीखें।
- राजविद्या के बाद गंधर्व जिसमें स्वर, राग, रागिणी, समय, ताल, ग्राम, ग्राम, तान व नृत्य, गीत आदि को यथावत सीखें।

3.6 सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार विद्या एवं अविद्या–

अय विद्या ऽविद्या बन्ध मोक्ष विषयान् व्याख्यास्यामः

विद्यां चाऽविद्यां च यस्तद्वेदोभय सह।

अविद्यया मृत्युं तीत्वा विद्ययाऽमृतश्नुते।।

जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ ही साथ जानता है वह अविद्या अर्थात् कमोपिसना से मृत्यु को तरके विद्या अर्थात् ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है अविद्या के लक्षण जो अनिव्य संसार और देहाद में नित्य अर्थात् जो कार्य–जगत देखा सुना जाता है, सदा रहेगा, सदा से है और योगबल से यी देवों का शरीर सदा रहता है जैसे विपरीत बुद्धि होना अविद्या का प्रथम भाग है। अशुचि अर्थात् मलमय के और मिथ्या भाषण चोरी आदि अपवित्र में पवित्र बुद्धि दूसरा अत्यन्त विषय सेवन रूप दुःख में सुख बुद्धि आदि। अनात्मा में आत्म बुद्धि का करना अविद्या का चौथा भाग है। इस 4 प्रकार के विपरीत ज्ञान को अविद्या कहते है। इससे विपरीत अर्थात् अनित्य में अनित्य, नित्य में नित्य, अपवित्र में अवित्र, पवित्र में पवित्र, दुःख मं दुःख, सुःख में सुःख, अनात्मा में अनात्मा, आत्मा में आत्मा का ज्ञान होना विद्या है।

जिससे पदार्थो का यथार्थ स्वरूप बोध होवे वह विद्या जिससे तत्व स्वरूप न जान पड़े अन्य में अन्य बुद्धि होवे वह अविद्या कहलाती है।

अर्थात् कर्म और उपासना अविद्या इसीलिए है कि वह ब्रम्ह और अंतर क्रिया– विशेष नाम है, ज्ञान– विशेष नहीं।

3.7 सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार भक्ष्याभक्ष्य की व्याख्या–

अभक्ष्याणि द्विजातीनाममेध्य प्रभवाणि च।।

द्विज अर्थात् ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र को मलीन, विष्ठा, मूत्रादि के संसर्ग से उत्पन्न हुए सात फल मूलादि न खाना, जैसे– अनेक प्रकार के मद्य, गांजा, भांग, अफीम, दारू, पान–मसाला, आदि जो –जो बुद्धि का नाश करने वाले

पदार्थ है उनका सेवन कभी न करें और जितने अन्य सड़े–गले, बिगड़े, दुर्गन्धादि से दूषित अच्छे प्रकार न बने हुए और मद्य–मांसाहारी, मलेच्छ कि जितना शरीर मद्य मांस के परमाणुओं से पूरित है। उनके हाथ का न खावें जिसमें उपकारक प्राणियों की हिंसा अर्थात् जैसे एक गाय के शरीर से दूध, घी, बैल, गाय उत्पन्न होने से एक पीढ़ी में कुछ कम चार लाख मनुष्यों को सुख पहुॅचता है पशुओं को न मारे न मारने दें। कोई मांसाहारी खावे तो भी संसार की हानि नहीं होती है किन्तु उस मनुष्य का स्वाभाव मांसाहारी होकर हिंसक हो जाता है जितना हिंसा और चोरी विश्वासघात, छल आदि से पदार्थो को प्राप्त होकर भोग करना है। वह अभक्ष्य और अहिंसा, धर्मादि कर्मो से प्राप्त होकर भोजनादि करना भक्ष्य है। जिन पदार्थो से स्वास्थ्य रोगनाशक बुद्धि, बल, पराक्रम और आयु की वृद्धि होवे उन तण्डुल, गोधूम, फूल, मूलकन्द, दूध, घी, मिष्ठादि का सेवन उन पदार्थो का यथायोग्य पाक मेल करके यथोचित समय पर मतिहार भोजन करना सब भक्ष्य कहता है जितने पदार्थ अपनी प्रकृति से विरूद्ध विकारक करने वाले हैं जिस जिस के लिए जो–जो पदार्थ वैदिक शास्त्र में वर्जित किए है उन–उन का त्याग जो–जो जिस–जिस के लिए विहित है उन उन का गृहण करना भक्ष्य है।

- किसी के भोजन के बीच में न खावें।
- अधिक भोजन न करे।
- मुॅह हाथ धोए बिना कहीं इधर–उधर न जायें।
- प्रथम गुरू को भोजन कराए।
- स्त्री –पुरूष साथ में न खाएं।
- चौके में खाना खाएॅ।

चतुर्थ अध्याय

4.1 महर्षि दयानन्द जी का जीवन परिचय

4.2 महिर्ष दयानन्द जी के द्वारा रचित ग्रन्थ

4.3 स्वामी दयानन्द के अनुसार राजधर्म

4.4 राज गुण

4.5 राजा पुरूष और शास्त्र व्यवहार हेतु विवादास्पद मार्ग

4.6 राज दिनचर्या

चतुर्थ अध्याय

4.1 महर्षि दयानन्द का जीवन परिचय–

महान शिक्षाविद, दार्शनिक, क्रान्तिकारी, समाज सुधारक एवं आर्य समाज के प्रतिष्ठाता महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म वर्तमान सौराष्ट्र के मौरवी राज्य के अड्कारा नामक नगर में फाल्गुन वदि दशमी संवत् 1981 तदुनुसार 12 फरवरी सन् 1824 ई0 में एक उच्च ब्राम्हण कुल में पं0 कर्षण जी के घर हुआ पूज्य माता का नाम यशोदा बाई था। पिता ने अपने प्यारे पुत्र का नाम मूलशंकर रखा। इनके पिता बड़े धर्मनिष्ठ और कर्तव्य परायण व्यक्ति थे वे शिव के बड़े उपासक थे और मूलशंकर को भी वैसा ही बनाना चाहते थे मूलशंकर का पांचवे वर्ष विद्यारम्भ समारोह हुआ इन्हें देवनागरी अक्षर संस्कृति शब्द, रूपावली पढ़ाई गई उसके बाद मातृभाषा की पुस्तके पढ़ाई गई व्याकरण का सामान्य ज्ञान ''हितोश देश रघुवंश के सर्ग'' तथा शिव सहस्त्रनाम का पाठ उसके पिता नियमापूर्वक कराते रहे आठवे वर्ष में उपनयन संस्कार के बाद वेदाध्ययन आरम्भ हुआ और यर्जुवेद कण्ठस्थ कर लिया।

पिता के भौव होने के कारण मूलशंकर के हृदय में भी शिव के प्रति श्रद्धा भक्ति का उदय हो गया परन्तु 14 वर्ष की आयु में एक घटना ने इस शिव भक्ति को छिन्न भिन्न कर दिया। शिव रात्रि के दिन बालक मूलशंकर ने शिव व्रत रखा और रात्रि जागरण किया मध्य रात्रि में शिवलिंग पर चढ़े प्रसाद को चूहे द्वारा खाते देखकर उनके चिन्तन में तरंगे उत्पन्न होने लगी और उसने सच्चे शिव का साक्षात करने का दृढ़ संकल्प किया उन्होंने घर पर आकर वृतोपवास तोड़ दिया।

शिव रात्रि की इस घटना में सच्चे शिव की खोज का बोध प्राप्त हुआ इसी कारण इस रात्रि को बोधा रात्रि भी कहा गया है।

इस घटना के दो वर्षो बाद पयारी शगिनी का तथा पांचवे वर्ष में धर्मात्मा विद्वान चाचा जी की विशूचिका से मृत्यु हो गई। महर्षि जी के शब्दो में '' उस समय मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं भी चाचा जी के सदृश एक दिन मरने वाला हूँ, उनकी मृत्यु होने से अत्यन्त वैराग्य उत्पन्न हुआ कि संसार में कुछ भी स्थिर नही''।

मूलशंकर ने सोचा कि यह कार्य माया, मोह ममता के जंजाल में पूर्ण नहीं हो सकता है। अतः इसके लिए गृह–त्याग की आवश्यकता होगी, उनका यह विचार माता पिता के सामने आते ही उन्होंने मूलशंकर के विवाह की तैयारी शुरू कर दी तब जब सारा घर खुशी में डूबा था तभी मूल शंकर सभी धन सम्पदा त्याग कर बाईस वर्ष की अवस्था में सम्वत् 1903 में शौच के बहाने एक धोती साथ लेकर घर सायंकर त्याग दिया।

मूलशंकर ने गृह त्याग मुख्य रूप से दो इच्छाओं को लेकर किया था– एक तो सच्चे शिव की प्राप्ति और दूसरे मृत्यु पर विजय प्राप्त कर मृत्युंजय बनना।

इस प्रकार वह ज्ञान प्राप्ति की खोज में इधर से उधर भटकते फिरे। एक बार जब वे बड़ौदा होते हुए नर्मदा की ओर चले तो उन्हें परमानन्द जी मिले और उनसे उन्होंने कई माह वेदान्तसार आर्य हरिहर और वेदान्त परिभाषा आदि ग्रन्थों का अध्ययन किया। चौबीस वर्ष की आयु में दक्षिण पण्डित दण्डी स्वामी परमानन्द जी ने उन्हें सन्यास की दीक्षा दी और उनका नाम सरस्वती रखा।

इसके बाद संवत 1916 में दयानन्द जी मथुरा में स्वामी विरजानन्द के पास पहुॅचे। स्वामी विरजानन्द जी से उनक प्रथम वार्तालाप उनके ज्ञान की पिपास की ओर संकेत करता है। मथुरा पहुंचने पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुरू का दरवाजा खटखटाया तो अन्दर से गुरू जी ने पूछा कौन है? दयानन्द ने

अत्यन्त विनम्रता के साथ उत्तर दिया कि मैं कौन हूॅ यही जानने के लिए आपके पास आया हूॅ अब स्वामी विरजानन्द जी ने समस्त अनार्ण ग्रन्थ फिकवा दिये और दिये समस्त अनार्ण ज्ञान को विस्मृत कर देने को कहकर उन्हें अपना शिष्य बना लिया।

शिक्षा समाप्ति पर स्वामी विरजानन्द जी ने दीक्षा पाकर आशीर्वाद दिया। गुरू से विदा होकर महर्षि जी ने उनके द्वारा आदेशित लोको प्रचार प्रवत्त हुए। जगह–जग मूर्ति पूजा का खण्डन किया, पण्डितों से शास्त्रार्थ करते थे और लोगों को परास्त करते, कुरीतियों का खण्डन करते साम्प्रदायिकता को बलहीन बनाते थे। इससे बहुत से पण्डित साधु उनके विरोधी हो गये और उनसे ईर्ष्या का भाव रखने लगे।

इसी तरह समाज की कुरीतियों, व्याभिचारों एवं पाखण्डों पर महर्षि प्रहार पर प्रहार कर रहे थे। जिसके कारण इनके बहुत विरोधी हो गये थे जिसके परिणाम स्वरूप इनके रसोइयो जगन्नाथ को विरोधियों ने अपने जाल में फंसाकर उसके द्वारा महर्षि को दूध में कांच पिलवा दिया जब स्वामी जी को इस सत्य का पता चला तो उन्होंने इस जहर को निकालने का अथक प्रयास भी किया क्योंकि इस तरह इन्हें 16 बार और भी जहर दिया जा चुका था लेकिन वह जहर इस योगी का बालबांका न कर सका था। इस बार जहर अत्यधिक मात्रा में होने के कारण उसे निकाल न सके तब उन्होने जगन्नाथ से कहा कि ''जगन्नाथ मेरे इस समय मरने से मेरा कार्य सर्वथा अधूरा रह गया आप नही जानते कि इससे लोकहित की कितनी हानिी हुई है अच्छा, विधाता के विधान में ऐसा ही होना था.... जगन्नाथ! लो यह कुछ रूपये है मैं आपको देता हूॅ चुपचाप भाग जाओ।

कार्तिक अमावस्या सम्वत् 1940 दीपावली (मंगलवार) को सायं 6 बजे मंत्रोचारण के बाद– हे दयामय, हे सर्वशक्तिमान ई वर तेरी यही इच्छा है सचमुच तेरी यही इच्छा है सचमुच तेरी यही इच्छा है परमात्मा देव तेरी इच्छा पूर्ण हो! अहा मेरे परमे वर तूने अच्छी लीला की है यह कहकर अस्ता चल की ओट में हो गये।

4.2 महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित ग्रन्थ इस प्रकार है –

1. संध्या (सं0 1920)
2. भागवत खण्डनम् (सं0 1923)
3. अद्धैतमतखण्डनं (ज्येष्ठ सं0 1927 वि0)
4. गर्भभतादिनी उपनिशद (आशाढ़ सं0 1931)
5. सत्यार्थ प्रकाश सं0 1931 प्रथम संस्करण 1939 द्वितीय संस्करण
6. संध्योपासनादि पंच महायज्ञ विधि सं0 1931 एवं 1934
7. आर्याभिविनय (चैत्र संख्या 1932)
8. संस्कार विधि (सं0 1932)
9. ऋग्वेद भाष्य (सं0 1933)
10. यर्जुवेद भाष्य (सं0 1933)
11. आर्योद्देश्य रत्नमाला (श्रावण सं0 1939)
12. भ्रान्ति निवारण (कार्तिक 1934)
13. विवाह पद्धति (श्रावण सं0 1939)
14. संस्करण वाक्य प्रबोध (फागुन 1936)
15. व्यवहार भानुः (फागुन सं0 1936)
16. भ्रमोच्छेदन (ज्येष्ठ सं0 1937)
17. गोकरूणानिधि (फागुन 1937)
18. पंच महायज्ञ विधि (1931)

19.वेदान्ति ध्वान्त निवारण (कार्तिक मार्ग शीर्षक सं0 1939)

20.वेद विरूद्ध मतखण्डन (कार्तिक मार्ग शीर्षक सं0 1936)

21.शिक्षा पत्नी ध्वाननिवारण (पौश सं0 1931)

22.पाखण्ड खण्डन (सं0 1935)

23.ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका (सं0 1933)

24.वेदाङ्.ाग प्रकाश

4.3 स्वामी दयानन्द जी के अनुसार राजधर्म–

राजधर्मान् प्रवदयामि यथावृत्तों भवेत्नृपः।

संभवश्च यथा तस्य सिद्धिश्च परमायथा।।

जिस प्रकार का राजा होना चाहिए और जैसे इसके होने का संभव और जैसे इसको परम सिद्धि प्राप्त होवे यह दयानन्द सरस्वती जी कहते है जैसा परम विद्वान ब्राम्हण होता है वैसा विद्वान सुशिक्षित होकर क्षत्रिय के योग्य है कि इस साम्राज्य की रक्षा न्याय से यथावत करें। जो दण्ड है वही पुरूष राजा, वही न्याय का प्रचार कर्ता और सबका शासनकर्ता वही चार वर्ण और चार आश्रमों के धर्म का प्रतिभूत अर्थात जामिनी है।

स्वामी जी का मानना था कि वही प्रजा का शासनकर्ता सब प्रजा का रक्षक, सोते हुए प्रजास्थ मनुष्यों में जागता है इसलिए बुद्धिमान लोग दण्ड को ही धर्म कहते है।

जो दण्ड अच्छे प्रकार विचार से धारण किया जाए तो वह सब प्रजा को आनन्दित कर देता है और जो बिना विचारे चलाया जाये तो सब ओर से राजा का विनाश कर देता है।

4.4 राजा के गुण –

- प्रशंसकीय धार्मिक राजसभा और सभासद सबके बीच में उत्तम पुरूष हो।
- तीनो सभाओं में सम्मानित हो।
- सर्वहित करने के लिए परतन्त्र और धर्मयुक्त हो।
- विद्युत के तुल्य शीघ्र ऐश्वर्यकर्ता, वायु के समान तेज, हृदय की बात जानने वाला हो।
- पक्षपात रहित न्यायाधीश के समान हो।
- धर्म विद्या का प्रकाशक हो।
- अग्नि के समान दुष्टों को भस्म करने वाला अर्थात् वरूण के समान हो।
- जो सूर्यवत प्रतापी सबके बाह्य और भीतर मनी को अपने तेज से तपने द्वारा जिसको पृथ्वी में कड़ी दृष्टि से देखने वाला कोई समर्थ न हो।
- अपने प्रभाव से अग्नि , वायु, सूर्य, धर्म प्रकाशक, धर्म वर्द्धक, सभाध्यक्ष हो।
- नीति को जानने वाला राजा जिसके सभी मित्र हो।

4.5 राजपुरूष और शास्त्र व्यवहार हेतु विवादास्पद मार्ग–

सभा राजा और राजपुरूष सब लोग दशोचार और शास्त्र व्यवहार हेतुओं से निम्नलिखित 18 विवादास्पद मार्गो में विवाद युक्त कर्मो का निर्णय प्रतिदिन किया करे। और जो–जो नियम शास्त्रोकन न पावें और उनके होने की आवश्यकता जावें।

ये अट्ठारह मार्ग है–

1. ऋणदान– किसी से ऋण लेने देने में विवाद।
2. निक्षेप– किसी न किसी के पास पदार्थ धरा हो और मांगे पर न दें।
3. अश्वामिविक्रयः – दूसरे के पदार्थो को दूसरा बेच लेवे।
4. सम्भूयचसमुत्थानं – मिल–मिलाकर किसी पर अत्याचार करना।
5. दत्तश्यानप्रक्रमच– दिये हुए पदार्थ को न देना।
6. वेतन्श्यैव च दानम् – वेतन न देना अथवा कम देना।
7. संवेदश्चव्यतिक्रम – प्रतिज्ञा से विरूद्ध वर्तना।
8. क्रय– विक्रयानुशय– लेन–देन में झगड़ा होना।
9. विवादास्वामिपालयो– पशु के स्वामी और पालने वाले का झगड़ा।
10. सीमा का विवाद
11. किसी को कठोर दण्ड देना
12. कठोर वाणी का बोलना।
13. चोरी का डाका डालना।
14. किसी काम को बलात्कार से करना।
15. किसी की स्त्री व पुरूष का व्याभिचार ढोना।
16. स्त्री और पुरूष के धर्म में व्यतिक्रम होना।
17. विभाग में वाद –उठना।
18. चेतन को दॉव में रखकर जुऑ खेलना।

4.6 राजा की दिनचर्या

- जब पिछली पहर रात्रि रहे तब उठ सावधान होकर परमेश्वर का ध्यान।

- अग्निहोत्र धार्मिक विद्धानों का सत्कार, तत्पश्चात् भोजन करके भीतर सभा में प्रवेश करें।
- वहॉ खड़ा रहकर जो प्रजा जन उपस्थित हो उनको मान्य दें।
- तत्पश्चात् मुख्यमंत्री के साथ राजव्यवस्था का विचार करें।
- एकांत में घूमने को जाएं।
- मैदान में बैठकर मन्त्री से विचार करें।
- गम्भीर विचार परक तथा सभासदों की अनुमति से कार्य करें।

पंचम अध्याय

महर्षि दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचारों की समीक्षा, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 शैक्षिक चिन्तन

- सैद्धान्तिक स्तर पर
- पद्धति स्तर पर

5.2 भारतीय शिक्षा में महर्षि दयानन्द सरस्वती के चिन्तन की प्रासंगिकता

5.3 निष्कर्ष

5.4 भावी अध्ययन हेतु सुझाव

5.5 अन्य सुझाव

5.6 भावी शोधकर्ताओं के लिए सुझाव

पंचम अध्याय

5.1 शैक्षिक चिन्तनः

5.2 **सैद्धान्तिक स्तर पर** – महर्षि दयानन्द सरस्वती धर्म मर्मज्ञ आर्य समाज के संस्थापक, समाज सुधारक और राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचारक स्त्री शिक्षा बालक –बालिकाओं को समान शिक्षा के समर्थक के रूप में प्रसिद्ध है। इन कार्यो के लिए इन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अमूल चूक परिवर्तन किये थे इसीलिए ये शिक्षा शास्त्री के रूप में प्रसिद्ध है। महर्षि दयानन्द जी प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्वति के सबसे बड़े समर्थक थे। इन्होंने अंग्रेजी के माध्यम से दी जाने वाली अंग्रेजी भाषा का विरोध किया और प्राचीन परम्परा के अनुसार सनातनीय वेद उपनिषक और स्मृतियों की शिक्षा का आवश्यकता पर बल दिया ये माता पिता का यह कर्तव्य समझते थे कि वे अपने बच्चों की शिक्षा का प्रबन्ध करें जो माता पिता ऐसा नहीं करते उन्हें ये अपने बच्चे का शत्रु मानते थे।

5.3 **पद्धति स्तर पर** – महर्षि दयानन्द सरस्वती यद्यपि प्राचीन भारतीय शिक्षा को श्रेष्ठ समझते थे किन्तु उन्होंने नवीन पाश्चात्य शिक्षा को कभी भी उपेक्षित नहीं रखा वह दोनों को ही समन्वित कर बालक का नैतिक शारीरिक, सामाजिक विकास के पथ पर अग्रसर करना चाहते थे इसके लिए उन्होंने सभी प्रकार की शिक्षण पद्वतियों से वैदिक शिक्षण पद्वति को श्रेष्ठ माना। इन्हीं के विचार प्रक्रिया के आधार पर गुरूकुल कांगड़ी, शिक्षाश्रम, एवं डी0ए0वी0 विद्यालयों की स्थापना हुई। लाला मुंशीराम ने जहॉ प्राचीन शिक्षा पद्वति के अनुसार गुरूकुल एवं आश्रम स्थापित कर प्राचीन वैदिक शिक्षा एवं दर्शन के अनुरूप शिक्षण प्रक्रिया का पुनराम्भ किया। वहीं लाला हंसराज डी0ए0वी0 स्कूलों की स्थापना की जिसमें

अंग्रेजी माध्यम से पढ़ायी करवायी जाती थी। दोनों ही पद्वतियॉ महर्षि दयानन्द सरस्वती की चिन्तन प्रक्रिया से प्रसूत है।

5.4 भारतीय शिक्षा में महर्षि दयानन्द सरस्वती के चिन्तन की प्रासंगिकता–

महर्षि दयानन्द सरस्वती केवल धर्म प्रचारक और समाज सुधारक ही नही थे अपितु राष्ट्रीय जागरण के प्रेरणता के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का बड़ा योगदान है यह भारतीय शिक्षा को भारतीय बनाने अंग्रेजी के स्थान पर मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने और अंग्रेजी पद्वति पर चलने वाले विद्यालयों के स्थान पर भारतीय पद्वति पर चलने वाले गुरूकुलों और डी0ए0वी0 विद्यालयों की स्थापना करने के लिए सदैव स्मरण रहेंगे।

जन शिक्षा, स्त्री शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा, धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा का बिगुल भी इस देश में सबसे पहले महर्षि दयानन्द जी ने बनाया था।

महर्षि दयानन्द जी ने अपने शिक्षा दर्शन में शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर जो विचार प्रस्तुत किया है उनसे पता चलता है कि स्वामी जी ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में अमूल चूक परिवर्तन कर शिक्षा को जीवन उपयोगी बनाना चाहते थे।

भारतीय शिक्षा को उनके योगदान एवं उनके शिक्षा दर्शन का मूल्यांकन डाक्टर मणि के अग्रपित शब्दों में व्यक्त करना पूर्णतया सही रहेगा। हमारे देश की शिक्षा को महर्षि दयानन्द जी का योगदान वास्तव में अत्यनत प्रभावपूर्ण एवं महत्वपूर्ण है हलाकि उनका कार्यक्षेत्र मुख्यताः आध्यात्मिक, धाार्मिक एवं सामाजिक था। उन्होंने किसी भेदभाव के बिना पुरूषों एवं स्त्रियों दोनों के हित के लिए जन साधारण की शिक्षा का अनुमोदन किया।

अब समय आ गया है कि नये सिरे से वैदिक साहित्य का सृजन और बुद्धिमान प्रतिभा सम्पन्न उपदेशकों का निर्माण करें अपने कार्य तथा प्रचार का प्रकार बदले। हमारे साहित्य एवं प्रवचनों अवैदिक मान्यताओं का खण्डन सूझ–बूझ के साथ हो।

वैदिक धर्मी बन्धुओं क्या आपको यह जानकर कष्ट की अनुभूति नही होती कि आकाशवाणी दूरदर्शन एवं अधिकांश लेखकों, वक्ताओं, कवियों, पत्रकारों आदि के द्वारा महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की प्रायः उपेक्षा होती है यथोचित सम्मान प्राप्त नहीं हो पा रहा है जबकि पाखण्डियों के आवश्यकता से अधिक गुणगान होते है हमने समय के साथ चलने और विशेष ध्यान नहीं दिया। यही कारण है कि हम जिन भद्रताओं को विकसित करना चाहते है उनका दिन प्रतिदिन अवमूल्यन होता जा रहा है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की कार्य पद्वति और प्रचार शैली में भारतीय समाज के लिए प्रेरणादायी सिद्ध होगा क्योंकि वेद आदि ज्ञान के ग्रन्थ है उनका प्रणयन ऋषियों ने किया था यद्वपि वेदों का ज्ञान लुप्त नही हुआ था पर उसके ऊपर बादलों का साया पड़ गया था।

महर्षि दयानन्द सरस्वती भारत के उन सपूतों में से थे जिन्होंने अंग्रेजों के पूर्णतया अधिपत्य में हमारे अस्तित्व को बचाया। तब प्राचीन आर्य संस्कृत और वैदिक धर्म का सर्वथा लोक हो चुका था। दम्ब और प्राखण्ड का सर्वत्र बोलबाला था महर्षि दयानन्द जी ने देश में फैले हुए इस भूमि का पर्दाफाश करके उनके नवजीवन का संदेश दिया। विधवा विवाह, प्रचार तथा बाल विवाह निषेध आदि अनेक राष्ट्र निर्माण कार्य प्रवृत्तियों का प्रचार करने के साथ–साथ देश में प्रचलित कुरीतियों, मिथ्या

आण्डम्बरों का विनाश करना ही महर्षि दयानन्द जी का मात्र एक लक्ष्य था।

महर्षि दयानन्द जी के सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह प्रत्येक व्यक्ति और समाज की उन्नति व प्रगति चाहते थे इसीलिए उनके द्वारा संस्थापित आर्य समाज में धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक सभी प्रकार सुधारों की दिशा में अग्रणी कार्य किया।

महर्षि दयानन्द जी ने अपने समय की विशमताओं और समस्याओं के विरूद्ध आवाज उठाकर संघर्ष कर नारा बुलन्द किया।

आध्यात्मिक विद्या से प्रेम रखने वाले कुछ अमेरिकन तथा अन्य विद्यार्थी अपने आपको चरणों में रखते है और प्रकाश की याचना करते है उन लोगों के साहसिक, व्यवहारिक और व्यवहार ने कुदरतन उनकी और सर्व साधारण का ध्यान खींचा है।

हमें नास्तिक अविश्वासी और धर्महीन कहा गया हम केवल युवक और लोगों की सहायता नही चाहते। बुद्धिमान और सम्मानित लोगों की सहायता भी चाहते है इस कारण हम आपके चरणों में इस प्रकार आते है जैसे पिता के चरणों में पुत्र आता है हम आपकी सेवा में अभिनय से नहीं अपितु नम्रता से आते है और हम आपकी सलाह लेने और दिखाये हुए मार्ग पर चलकर कर्तव्य पालन के लिए तैयार है।

भारतीय पुर्नजागरण के समकालीन आन्दोलनों में महर्षि दयानन्द के ओजस्वी विचार और उनके द्वारा प्रतिपादित अध्यात्मिक ज्ञान, जन साधारण के मानस को आन्दोलित करने में सक्षम सिद्ध हुआ है महर्षि दयानन्द जी की दार्शनिक, धार्मिक एवं सामाजिक चिन्तन धारा के परिप्रेक्ष्य में उनके सार्वगर्भित चिन्तन का दिग्दर्शन कराने का एक शोधपूर्ण प्रयास है।

5.5 निष्कर्ष –

भारत के उज्जवल वरदान महर्षि दयानन्द सरस्वती जहॉ परम विद्वान सत्य सनातन वैदिक धर्म के विशुद्ध स्वरूप के पुनः संस्थापक समाज सुधारक तथा प्रगतिशील मौलिक चिन्तक थे वह एक महान लेखक भी थे उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हिन्दी और संस्कृत भाषाओं में जितने विशाल साहित्यकार सृजन उन्होने किया उतना किसी अन्य विद्वान व साहित्यकार ने नहीं किया। उनके द्वारा रचित विशाल साहित्य केवल धार्मिक व दार्शनिक ही नही थे उनकी पुस्तकों का सम्बंध व्यवहारिक व लौकिक विषयों से ही है। उनके ग्रन्थों में हिन्दी गद्य की एक शैली विकसित हुई जो सरल, सरस तथा मनोहरी है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देश की कुप्रथाओं, भ्रष्टाचारों, मिथ्या आडम्बरों का निवारण के लिए खण्डन प्रणाली का आश्रय लिया वह मूर्ति पूजा के कट्टर विरोधी थे और अवतारवाद को भ्रान्त समझते थे। बलि प्रथा के स्वयं भुक्त भोगी थे और मन्दिरों तथा मठों में व्याप्त अनाचार को उन्होंने साक्षात देखा था। परिणामतः उन सब के विरूद्ध उनके तर्क का कठोर कुठार उठ गया। लोग उनके भक्त बनते पर निहित स्वार्थ वाले व्यक्ति विरोधी भी बन जाते उन्होनें हिन्दुओं की अज्ञान और अन्ध श्रद्धा की एकता को तोड़ने के लिए अपनी पाखण्ड खण्डनीय की पताका गाड़ दी थी और जोर–जोर से खण्डन प्रारम्भ कर दिया था अपने ध्येय को पूरा करने के लिए उन्होंने आर्य समाज की स्थापना करके भारतीय समाज का बहुत बड़ा उपकार किया। धार्मिक सामाजिक और राजनीतिक दासता को दूर करने का प्रयत्न किया।

निष्कर्षता कहा जा सकता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का चिन्तन और उनका युग बोध पूर्णता राष्ट्रीय [illegible]व समाज और राष्ट्र के उत्थान में उनका अतुलनीय योगदान है पाश्चात्य [illegible] के चकाचौंध से अभिभूत भारतीय

दृष्टि को को आत्मा निरक्षण की प्रेरणा देने और भारतीय जनता के हृदयों में आत्म गौरव का भाव जगाने वाले महर्षि अमर है।

उन्होंने भारतीय स्वतत्रंता की नैतिक और बौद्धिक नींव रखी है तथा स्वराज्य की वैदिक कल्पना को पुर्नजागृत करने के साथ लोकतंत्रिय चिन्तन एवं शासन प्रणाली को बल प्रदान किया।

धर्म भूमि भारतवर्ष में 12वीं शताब्दी के अन्त जितने विमलपन प्रवृतक हुए उनमें महत्व प्रचार तथा स्थायी कार्य की दृष्टि से महर्षि का पद बहुत ऊँचा है।

सार्वभौमिक अनिवार्य शिक्षा, स्त्रियों को पुरूष के समान वेद अध्ययन का अवसर देना, नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा, संस्कारों को पुनः जीवित करने का प्रयत्न अपने सिद्धान्तों को मूक रूप देने के लिए सत्यार्थ प्रकाश नामक किताब मे उल्लिखित किया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती की आस्था वैदिक दर्शनमय थी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश किताब में छात्रों के पठन–पाठन की व्यवस्था को सुचारू रूप से व्यवस्थित किया है कि एवं सत्यासत्य ग्रन्थों के नाम और पढ़ने–पढ़ाने की विधि का भी उल्लेख किया है। सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार विद्या और अविद्या भक्षाभक्ष, बन्द और मोक्ष इसका भी बहुत अच्छी तरीके से उल्लेख किया है। भक्षाभक्षी के विषय के बारे में स्वामी जी का मानना था कि प्रथम गुरू को भोजन कराये। मुॅह हाथ धोये बिना कहीं इधर–उधर न जाये। स्त्री पुरूष साथ में न खाये। रसोइयें में खाना खाये।

महर्षि ने वर्ण वर्ग जाति भेद का विरोध किया एवं निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा पर बल दिया उनका कहना ः वेद ने सभी मनुष्यों को पढ़ने का समान अवसर दिया है और सुनने का भी समान अवसर दिया है वे कहते थे कि वर्णाश्रम गुण कर्मो की योग्यता से होता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया है तथा उनके समर्थक रहे है उनका कहना था कि पुरूषों के समान स्त्रियों का भी 25 वर्ष तक उपनयन संस्कार के साथ शिक्षा ग्रहण करना चाहिए। उन्होंने वेद पढ़ने का निषेद्ध नहीं किया। बल्कि वेदों में कहा गया है कि ब्रम्हचारिणी अपनी योग्यपति का चुनाव करें। लेकिन स्वामी जी ने लड़कियों की शिक्षा के लिए पृथक विद्यालय की आवश्यकता पर बल दिया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी किताब सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रन्थ में कई चीजों के बारे में बताया है जिसमें 14 भाग उल्लेखित किये है प्रथम भाग में ओंमकार आदि नामों की व्याख्या सहज शब्दो में किया। सन्तानों की शिक्षा किस प्रकार होनी चाहिए माता पिता का कर्तव्य क्या होता है इसके बारे में द्वितीय भाग में बताया। ब्रम्हचर्य पठन–पाठन व्यवस्था, ब्रम्हचर्य नियम तृतीय भाग में बताया। मानव के लिए सबसे आवश्यक संस्कार विवाह और विवाह के प्रकार और ग्रह आश्रम का व्यवहार किस तरह से होना चाहिए इसका उल्लेख चतुर्थ भाग में किया है इसके साथ ही साथ पंचम भाग में वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम की विधि का उल्लेख भी किया है। एक राजा का धर्म क्या होना चाहिए। राजा कौन होना चाहिए सभापति ने कौन पुरूष होने चाहिए राजा की कुशलता का उल्लेख एवं राज्य की कुशलता का उल्लेख छठे भाग में किया है साथ ही साथ वेदेश्वर विषय के बारे में सप्तम भाग में किया है। विश्व की स्थिति उत्पत्ति एवं प्रलय का उल्लेख अष्टम भाग में किया है विद्या, अविद्या को नवम् भाग में उल्लिखित किया है। आचार्य, अनाचार मनुष्य के लिए किये जाने वाले कार्य का उल्लेख दसवें भाग में किय है। सन्

अर्यावृतीय, मतमंतातर, कुप्रथाओं, मिथ्या आडम्बरों का खण्डन मण्डन एकादश भाग में किया है जैन मत के बारे में द्वादश भाग में बताया गया है साथ ही साथ त्रयोदश भाग में ईसाइयों के मतों के बारे में बताया गया है।

14वें भाग में मुसलमानों के मत का विषय निहित है मेरा इस शोध का तात्पर्य सत्य, अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मित्थ्या ही प्रतिपादित करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है।

वह सत्य नहीं कहता जो सत्य के स्थान में असत्य एवं असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाय। किन्तु जो जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहता है जो मनुष्य पक्षपाती होता है वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त रहता है। स्वामी जी का मानना था कि सत्य ही सुन्दर है सत्य ही ईश्वर है सत्य को ही सभी व्यक्तियों को मानना चाहिये। असत्य को उसी प्रकार त्याग देना चाहिए जिस प्रकार से आत्मा निकलने के बाद मनुष्य शरीर को त्याग देता है।

आधुनिक शिक्षा की सबसे बड़ी कमी संस्कारहीनता है। छात्रों में अच्छी आदतों का विकास नहीं हो पाता है वे मूल्यहीन, संस्कारहीनता शिक्ष प्राप्त करनते है जिससे उनके व्यकित्व का विकास उचित रूप से नहीं होता है।

एक समाज सुधार के रूप में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जो भूमिका प्रस्तुत की उनके कारण महात्मा गांधी सुभाष चन्द्र बोस, महर्षि अरविन्द, रवीन्द नथ टैगोर, अरस्तू , प्लेटो आदि महापुरूषों ने उन्हें महान पुरूष त्यागी, ऋषि शिक्षा और सुधारक माना। इस संदर्भ में रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए लिखा है। ''मैं आधुनिक भारत के मार्ग प्रदर्शक उस दयानन्द को आदरपूर्वक श्रद्धांजलि देता हूॅ जिसने देश को पतितावस्था में हिन्दुओं को प्रभु की भांति और मानव [42] की सेवा के सीधे व सच्चे मार्ग का दिग्दर्शन कराया।''

महर्षि दयानन्द जी का सामाजिक शैक्षिक आन्दोलन में उल्लेखनीय योगदान है जीवन को सफल तथा प्रगतिशील बनाने के नियमों, साधनों, संस्कारों आदि का प्रतिपादन करना।

उन्होने जीवन का सांगोपांग एवं यथाविधि बनाने और तैयार करने के लिए समस्त वैदिक मतो और संस्कारों यम नियम, संस्कार यज्ञ आदि का पुर्नस्थापन कर व्यवहारिक जीवन और व्यवस्था को सफल बनाने के लिए जो श्रेयस्कर कार्य किये है वह निसंदेह उनका एक महान योगदान है इस संदर्भ में उनका नारा था वेदों की ओर लौट चलों।

5.6 भावी अध्ययन हेतु सुझावः

शोधकर्ता ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक चिन्तन का अध्ययन कर सुझाव प्रस्तुत किये है। इस प्रकार भावी शोधार्थी भारतीय शिक्षा जगत से जुड़े हुए विभिन्न प्राचीन ग्रन्थों में निहित भौक्षिक चिन्तन का अध्ययन कर सकते है तथा साथ ही जीवन एवं समाज के अन्य पक्षों का भी अध्ययन सम्भव है।

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत विषय के विवेचनोपरान्त सुझाव इस आशा से यि जा रहे है कि उनसे प्रेरित होकर भावी छात्र–छात्रा अनुसंधान के लिये इन विषयों की तरफ आकर्शित होगे। जिससे निश्चित रूप से भविष्य में शिक्षा और दर्शन के क्षेत्र में नये आयामों की उत्पत्ति होगी। उन कृतिपय सुझावां को निम्नांकित बिन्दुओं में किया गया है–

1) शिक्षा के उद्दश्यों से सम्बन्धित सुझावः

1. शिक्षा का उद्देश्य बालकों में उच्च कोटि की धार्मिक भावना का विकास है। सर्व धर्म सम्भाव प्रवृत्ति पैदा करना होना चाहिए।

2. शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक की जन्मजात भक्तियों का विकास कर उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना होना चाहिए।

2) पाठ्यक्रम से सम्बन्धित सुझावः

1. भारतीय शिक्षा एवं भारतीय विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भारतीय दर्शन के प्रमुख चिन्तन को स्थान दिया जाना चाहिए।
2. बालक के पूर्ण विकास के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं को पाठ्यक्रम में उचित स्थान प्रदान किया जाना चाहिए।

3) शिक्षक विधियों से सम्बन्धित सुझावः

1. शिक्षण विधि में स्वचिन्तन तथा स्वप्रयास को स्थान मिलना चाहिए।
2. शिक्षण विधि का आधार बालक का बौद्धिक मानसिक व ज्ञानात्मक विकास होना चाहिए।
3. व्यक्तिगत निर्देशन एवं परामर्श आदि को शिक्षण विधियों में उचित स्थान दिया जाना चाहिए।

4) गुरू– शिष्य सम्बन्ध के संदर्भ में सुझावः

1. गुरू एवं शिष्य सम्बन्ध परस्पर आत्मीयता पूर्ण एवं सहानुभूतिपूर्ण होने चाहिए।
2. गुरू शिष्य का सम्बन्ध पिता पुत्र के समान होना चाहिए।

5) महिला शिक्षा से सम्बन्धित सुझावः

1. पुरूषों की भांति स्त्रियों की शिक्षा की भी व्यवस्था की जानी चाहिए।
2. बालक एवं बालिकाओं को समान रूप से पाठ्यक्रम की शिक्षा प्रदान की जाये।

6) प्रौढ़ शिक्षा से सम्बन्धित सुझावः

1. प्रौढ़ शिक्ष हर वर्ग के तथा हर व्यवसाय में लगे अशिक्षित वयस्कों के लिए दी जानी चाहिए।
2. प्रौढ़ शिक्षा में अक्षर ज्ञान के साथ–साथ प्रौढ़ों को हर प्रकार के व्यवसाय की शिक्षा भी दी जानी चाहिए।

7) व्यावसायिक शिक्षा से सम्बन्धित सुझावः

1. व्यावसायिक शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषायें होना चाहिए।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षा को अधिक से अधिक व्यवसायिक बनाया जाना चाहिए।

8) मूल्यों पर आधारित शिक्षा हेतु सुझावः

1. मूल्यों की शिक्षा एक स्वतन्त्र विषय के रूप में न होकर विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रम में मूल्यों का समावेश होना चाहिए।
2. संविधान में निर्देशित मूल्य एवं सामाजिक उत्तरदायित्व मूल्य शिक्षा के आधार होने चाहिए।

9) अनिवार्य, निःशुल्क व सार्वभौमिक शिक्षा से सम्बन्धित सुझावः

1. शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार समाज के प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार होना चाहिए।
2. प्रत्येक नागरिक को अनिवार्य, निःशुल्क तथा सार्वभौमिक शिक्षा प्रदपान की जानी चाहिए।

10) अनुशासन से सम्बन्धित सुझावः

1. दमनात्मक अनुशासन के स्थान पर आत्म अनुशासन वच प्रभावात्मक अनुशासन पर बल दिया जाना चाहिए।
2. बालक की इन्द्रियों का उचित प्रशिक्षण एवं शोधन किया जाये जिससे बालक में आन्तरिक अनुशासन विकसित हो सके।

5.7 अन्य सुझावः

1. बालकों की आन्तरिक प्रकृति का बाह्य प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करके शिक्षा प्रदान की जाये।
2. शिक्षा राष्ट्रीय होनी चाहिए एवं उसमें भारत के भूत एवं भविष्य का ध्यान रखा जाना चाहिए।
3. शिक्षा के प्रत्येक स्तर अध्यापकों को अच्छे कार्यो के लिए सम्मान व उनके अनपेक्षित कार्यो के लिए अनुशासनात्मक कार्यवाही आवश्यक होनी चाहिए।
4. विद्यार्थियों को पुस्तकों की अपेक्षा प्रत्यक्ष स्रोतां से ज्ञान प्राप्त करने के अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।
5. शिक्ष को गतिशील एवं जीवन तभी बनाया जा सकता है जब उसका आधार व्यापक हो और सामुदायिक जीवन में उसका घनिष्ठ सम्बन्ध हो।

6. हमारे देश में विभिन्न स्थानों पर आर्य समाज, गुरूकुल कांगड़ी, डी.ए. वी. कालेज आदि अनेक शैक्षिक संस्थाएं है। इनकी सार्थकता के विषय में अध्ययन का विस्तृत क्षेत्र हमारे सम्मुख है।
7. स्वामी दयानन्द सरस्वती की विचारधारा का अन्य भारतीय शिक्षा शास्त्रियों, रवीन्द्र नाथ टैगोर, श्री विवेकानन्द, श्री अरविन्द आदि के चिन्तन के साथ तुलनात्मक अध्ययन भी ज्ञान के क्षेत्र में नया योगदान दे सकता है।
8. शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम शिक्षण विधि अनुशासन आदि पर भी पृथक अध्ययन कर शिक्षा को उपयोगी बनाया जा सकता है।

5.8 भावी शोध कर्ताआं के लिए सुझावः

1. महर्षि दयानन्द एवं महात्मा गांधी के शैक्षिक चिन्तन का तुलनात्मक अध्ययन एवं उनकी प्रासंगिता पर अध्ययन किया जा सकता है।
2. महर्षि दयानन्द एवं राजा राममोहन राय के शैक्षिक चिन्तन का तुलनात्मक अध्ययन एवं उनकी प्रासंगिकता पर अध्ययन किया जा सकता है।
3. महर्षि दयानन्द एवं डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक चिन्तन का तुलनात्मक अध्ययन एवं उनकी प्रासंगिकता पर अध्ययन किया जा सकता है।
4. महर्षि दयानन्द एवं स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक चिन्तन का तुलनात्मक अध्ययन एवं उनकी प्रासंगिकता पर अध्ययन किया जा सकता है।
5. महर्षि दयानन्द एवं डॉ0 जाकिर हुसैन के शैक्षिक चिन्तन का तुलनात्मक अध्ययन एवं उनकी प्रासंगिकता पर अध्ययन किया जा सकता है।

6. महर्षि दयानन्द एवं जॉन डी0वी0 के शैक्षिक चिन्तन का तुलनात्मक अध्ययन एवं उनकी प्रासंगिकता पर अध्ययन किया जा सकता है ।
7. महर्षि दयानन्द एवं डॉ0 राधाकृष्णन के शैक्षिक चिन्तन का तुलनात्मक अध्ययन एवं उनकी प्रासंगिकता पर अध्ययन किया जा सकता है।
8. महर्षि दयानन्द एवं महर्षि अरविन्द घोष के शैक्षिक चिन्तन का तुलनात्मक अध्ययन एवं उनकी प्रासंगिकता पर अध्ययन किया जा सकता है।
9. महर्षि दयानन्द एवं गौतम बुद्ध के शैक्षिक चिन्तन का तुलनात्मक अध्ययन एवं उनकी प्रासंगिकता पर अध्ययन किया जा सकता है।
10. महर्षि दयानन्द एवं मनु के शैक्षिक चिन्तन का तुलनात्मक अध्ययन एवं उनकी प्रासंगिकता पर अध्ययन किया जा सकता है।

महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य समाज से सम्बद्ध विद्वान यदि मडंनात्मक शैली में सत्य सनातन मान्यताओं का प्रचार, प्रसार देश काल परिस्थिति के अनुसार बुद्धिमत्तापूर्वक करे तो वैदिक धर्म का अधिक विस्तार हो सकता है। असत् मत–पन्थों से सम्बन्धित तथा कथित आचार्य, गुरू, सन्त, महात्मा, विद्वान वक्ता लेखक आदि असत्य एवं कपोलकल्पित अनिष्टकारी मान्यताओं का प्रचार करके लाखों व्यक्तियों को अपनी ओर आकर्षित कर लेते है और हम सूझबूझ के अभाव में समस्त वेदों चिन्तन से सर्वधारणा को विशेष प्रभावित नहीं कर पा रहे हैं यह प्रत्यक्ष प्रमाण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. स्वामी दयानन्द सरस्वती (1995) : ''सत्यार्थ प्रकाश'' प्रकाशक आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट, खारी बावली दिल्ली
2. डॉ0 वेद प्रकाश वेदालंकार (2005) : ''स्वामी दयानन्द'' अग्रवाल प्रकाश विकास बिहार, अम्बाला
3. डॉ0 भास्कर दत्त द्विवेदी (1988) : महर्षि दयानन्द 'इन्द्र स्वपन' जीवन ज्योति प्रकाशन दिल्ली
4. लाला लाजपत राय (1988) : ''युग प्रवर्तक स्वामी दयानन्द'' आर्य प्रकाशन मंडल, गांधी नगर दिल्ली
5. जगदेव शान्त (1999) : ''महर्षि दयानन्द (महाकाव्य)'' भारतीय साहित्य प्रकाशन मेरठ
6. श्री व्यथित हृदय (1997) : ''स्वामी दयानन्द'' राजभाषा प्रकाशन दिल्ली।
7. स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती : ''संस्कार महत्व'' गुरूदासमल छंगाराम आर्य सैजपुर बोधा, कर्णावती, गुजरात
8. डा0 शान्ती मल्होत्रा (1990) : ''स्वामी दयानन्द सरस्वती के राजनीतिक विचार'' के0के0 पब्लिकेशन, आनन्द पर्वत नई दिल्ली।
9. कर्म सिंह आर्य (1993) : ''महर्षि दयानन्द के ओजस्वी विचार'' ज्ञान गंगा, चावड़ी बाजार दिल्ली।
10. डॉ0 चन्द्रशेखर लोखड़े (2002) : ''नये युग की ओर'' आर्य समाज नई सड़क दिल्ली।
11. महर्षि दयानन्द सरस्वती : ''संस्कार चन्द्रिका'' सार्ववैशिक आर्य

(1959) प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली

12. महर्षि दयानन्द सरस्वती (1960) : 'व्यवहारभानु' आर्य सहित प्रचार ट्रस्ट 455 खारी बावली, दिल्ली–6

13. महर्षि दयानन्द सरस्वती (1960) : ''आर्योददे य रतनमाला'' आ साहित्य प्रचार ट्रस्ट 455 खारी बावली दिल्ली–6

14. महर्षि दयानन्द सरस्वती (1956) : ''सनातन धर्म'' आर्य सहित प्रचार ट्रस्ट, 455 खारी, बावली, दिल्ली–6

15. निर्मला, रघुनन्दन सिंह, (1963) : ''महर्षि दयानन्द सरस्वती– जीवन चरित्र'' आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट 455 खारी, बावली दिल्ली–6

16. भार्मा, लेखराम (1969) : 'महर्षि दयानन्द –शिक्षा दर्शन' आर्य प्रकाशन, 814 कूण्डेलान, अजमेरी–6

17. भार्मा, लेखराम (1971) : 'महर्षि दयानन्द –जीवन चरित्र एवं विचार दर्शन' आर्य प्रकाशन, 814, कूण्डेलान, अजमेरी–6

18. भार्मा रघुनन्दन (1969) : 'महर्षि दयानन्द –दार्शनिक विचार' सर्वउद्देश्य आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली–2

19. शास्त्री, महेन्द्र कुमार (1972) : ''योगीराज दयानन्द'' आर्य प्रकाशन, 814, कूण्डेलान अजमेरी–6

20. शास्त्री डाण्द (1960) : 'दिव्य आनन्द' आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट 455, खारी बावली, दिल्ली–6

21. बुच, एम0बी0 (1979) : सेकेण्ड सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेशन सोसायटी फॉर एजुकेशनल रिसर्च एण्ड

डेवलपमेंट –बड़ौदा

22. बुच, एम0बी0 (1991) : 'थर्ड सर्वे आफ रिसर्च' इन एजुकेशन' एन0सी0ई0आर0टी0 नई दिल्ली

23. पाण्डेय, राम शुक्ल (1992) : 'शिक्षा के दार्शनिक एव समाज शास्त्रीय पृष्ठभूमि' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा तृतीय संस्करण

24. तनवीर आलम– 2016–18 : महर्षि दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक चिन्तन का भारतीय शिक्षा में योगदान।

25. महात्मा नारायण स्वामी : ''कर्तव्य दर्पण'' सत्यानन्द वैदिक संस्थान आर्य समाज हिण्डौन सिटी राजस्थान

26 पं0 हरिदेव आर्य (2007) : ''राष्ट्रपति महर्षि दयानन्द सरस्वती'' मधुर प्रकाशन 2804 गली आर्य समाज बाजार सीताराम, दिल्ली–6

27. तपो भूमि अंक–1 सत्य प्रकाशन, वृन्दावन मार्ग, मथुरा, फरवरी 1998